ह़दीसे पाक में दुआ़ की तरग़ीब

अल्लाह करीम के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** पाक से क़बूलिय्यत के यक़ीन के साथ दुआ़ मांगा करो । (ترمذی، 5/292، حدیث:3490)

शैख़े मुह़क़्क़िक़, ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : दुआ़ ऐसी होनी चाहिये कि उस की क़बूलिय्यत में शको शुबा न हो बल्कि यक़ीन हो क्यूं कि यक़ीन के साथ दुआ़ करना क़बूल होने का असर रखता है । (शर्हे फ़ुतूहुल ग़ैब (उर्दू), स. 462 मुलख़्ख़सन) तअ़ज्जुब के साथ नहीं कि देखूं दुआ़ क़बूल होती है या नहीं, बल्कि जब भी दुआ़ मांगें तो इस यक़ीन से मांगा करें कि **अल्लाह** पाक क़बूल करेगा ।

दुआ़ मांगने का फ़ाएदा

मेरे पीरो मुर्शिद हुज़ूर ग़ौसे पाक, शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : (ऐ इन्सान !) बारगाहे इलाही में येह अ़र्ज़ न करो कि मैं **अल्लाह** पाक से दुआ़ करता हूं और वोह क़बूल नहीं फ़रमाता बल्कि (क़बूल होने, न होने के ख़याल को दिल से निकाल कर) हमेशा **अल्लाह** पाक की बारगाह में दुआ़ मांगते रहो क्यूं कि जो तू ने मांगा है अगर वोह तेरी क़िस्मत में होगा तो वोह तेरी दुआ़ के बा'द तेरी त़रफ़ चला दिया जाएगा और इस त़रह़ तेरे यक़ीन को और मज़बूत़ करेगा और अगर तेरी दुआ़ में मांगी हुई चीज़ तेरी क़िस्मत में न हुई तो तुझ से उस का ध्यान हटा देगा और अगर तुझ पर किसी का क़र्ज़ हुवा (और तू ने दुआ़ की) तो **अल्लाह** पाक क़र्ज़ वापस लेने वाले के दिल को तेरी त़रफ़ से फेर देगा कि वोह तुझे अपना क़र्ज़ मुआ़फ़ या कम कर दे या येह कि वोह सख़्त लहजे में क़र्ज़ का तक़ाज़ा करने

www.dawateislami.net

के बजाए नरमी या देर और आसानी से वापस देने का मुत़ालबा करेगा यहां तक कि तुझे आसानी हो जाए और अगर वोह दुन्या में तेरा क़र्ज़ मुआ़फ़ या कम न भी करे तो **अल्लाह** पाक तेरी उस दुआ़ जिस का असर दुन्या में ज़ाहिर न हुवा तुझे क़ियामत में उस के बदले अ़ज़ीमुश्शान सवाब अ़त़ा फ़रमाएगा क्यूं कि वोह बड़े करम वाला, ग़नी और रह़्म फ़रमाने वाला है। उस की पाक बारगाह में जो कोई भी दुआ़ मांगता है, **अल्लाह** करीम उसे ख़ाली हाथ नहीं लौटाता लिहाज़ा तेरी दुआ़ का दुन्या या आख़िरत में तेरे लिये कोई न कोई फ़ाएदा ज़रूर है। (शर्ह़े फ़ुतूह़ुल ग़ैब (उर्दू), स. 460, 461 मुलख़्ख़सन) या'नी दुआ़ राएगां (या'नी ज़ाएअ़) नहीं होती, दुआ़ के फ़ाएदे ज़रूर ह़ासिल होते हैं।

मैं हूं बन्दा तू है मौला तू है क़ादिर मैं नाकारा
मैं मंगता तू देने वाला या अल्लाह मेरी झोली भर दे

(वसाइले बख़्शिश, स. 122)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

दुआ़ के बदले क़ियामत में नेकियां

एक रिवायत में है : मुसल्मान क़ियामत के दिन अपने नामए आ'माल में ऐसी नेकियां देखेगा जो उस ने दुन्या में न की होंगी और न उन के बारे में जानता होगा तो उसे कहा जाएगा : येह तेरी उस दुआ़ का सवाब है जो तू ने दुन्या में मांगी थी। (फ़ुतूह़ुल ग़ैब (उर्दू), स. 155)

क़बूलिय्यते दुआ़ में देर होने पर

ह़ुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه **इर्शाद फ़रमाते हैं :** ऐ बन्दए ख़ुदा ! तू दुआ़ की क़बूलिय्यत में देर होने की वज्ह से अपने रब्बे करीम से नाराज़

होता है, तू कहता है कि **अल्लाह** पाक ने लोगों से मांगना मन्अ़ फ़रमाया और अपनी बारगाह में दुआ़ करना लाज़िम फ़रमाया है और मैं उस की बारगाह में दुआ़ मांगता हूं तो मेरी दुआ़ क़बूल नहीं होती, तू ऐसा न कह। ऐ नादान इन्सान ! तुझे कहा जाए कि तू आज़ाद है या ग़ुलाम (या'नी **अल्लाह** पाक के अह़कामात का पाबन्द है या इन से आज़ाद) ? अगर तू कहे कि मैं आज़ाद हूं तो तू काफ़िर है (क्यूं कि तू ने **अल्लाह** पाक के अह़कामात से बेज़ारी का इज़्हार किया है) और अगर तू कहे कि मैं ग़ुलाम बन्दा (या'नी पाबन्द) हूं तो फिर तुझे कहा जाएगा कि दुआ़ की क़बूलिय्यत का असर ज़ाहिर न होने या उस में देर होने की वज्ह से अपने ख़ालिक़ व मालिक **अल्लाह** पाक पर इल्ज़ाम लगाता है कि वोह मेरी दुआ़ सुनता नहीं है, अगर तू येह ख़याल न करता और दुआ़ की क़बूलिय्यत का असर ज़ाहिर न होने को **अल्लाह** पाक की ह़िक्मतो मस्लह़त जानता तो तुझ पर **अल्लाह** पाक का शुक्र करना लाज़िम है क्यूं कि उस ने तेरे लिये दुआ़ में मांगी गई चीज़ से बेहतर चीज़, ने'मत (या'नी आख़िरत में सवाब) का इरादा फ़रमाया है। (फ़ुतूहुल ग़ैब (उर्दू), स. 151 ता 152)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** पाक मेरी दुआ़ नहीं सुनता या क़बूल नहीं करता वग़ैरा न कहा जाए बल्कि बन्दा सोचे कि **अल्लाह** पाक ने मुझे कितने अह़कामात दिये हैं कि फ़ुलां काम कर और फ़ुलां काम मत कर, मैं **अल्लाह** पाक की कितनी बात मानता हूं ? किस हुक्म पर अ़मल करता हूं ? समझाने के लिये मिसाल दे रहा हूं या'नी हम उस की बात न मानें और वोह हमारी बात पूरी न करे तो हम उस से शिक्वा शिकायत करें कि वोह मेरी बात नहीं सुनता। **अल्लाह** पाक समीअ़ व बसीर है या'नी सुनता और देखता है, उस ने वा'दा किया है कि ﴿اُدْعُوْنِیْۤ اَسْتَجِبْ لَكُمْ﴾

(پ24، المؤمن:60) **तरजमा :** "मुझ से दुआ़ करो मैं तुम्हारी दुआ़ क़बूल करूंगा।" अलबत्ता क़बूलिय्यते दुआ़ की कुछ सूरतें ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के इर्शादात की रोशनी में ऊपर बयान हुईं। वरना क़बूलिय्यते दुआ़ का सवाब क़ियामत के दिन के लिये ज़ख़ीरा होगा जो फ़िलह़ाल हम पर ज़ाहिर नहीं है, اِنْ شَآءَ اللّٰه الْكَرِيْم क़ियामत में देखेंगे।

अल्लाह पाक से क्या दुआ़ करनी चाहिये ?

मेरे मुर्शिद ग़ौसे पाक शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : **अल्लाह** पाक से अपने पिछले गुनाहों की मुआ़फ़ी, आइन्दा गुनाहों से बचने, अच्छी त़रह़ से उस की इबादत करने, अच्छी मौत और अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام, सिद्दीक़ीन, शुहदा और नेक बन्दों से मुलाक़ात की दुआ़एं मांगा कर, येह कितने नेक बन्दें हैं। (फ़ुतूहुल ग़ैब (उर्दू), स. 154) या'नी मैं क़ियामत के दिन इन के साथ उठूं, मेरी इन से मुलाक़ात हो और मुझे इन की बरकतें मिलें, येह दुआ़ भी मांगा करें।

मैं गुनाहों में लिथड़ा हुवा हूं बद से बदतर हूं बिगड़ा हुवा हूं
अ़फ़्वे जुर्मो क़ुसूरो ख़त़ा की मेरे मौला तू ख़ैरात दे दे
हो करम अज़ तुफ़ैले मदीना मैं न हरगिज़ फिरूं कर के तौबा
अ़फ़्वे जुर्मो क़ुसूरो ख़त़ा की मेरे मौला तू ख़ैरात दे दे
मक्रे शैत़ान से तू बचाना साथ ईमां के मुझ को उठाना
नज़्अ़ में दीदे बदरुदुजा की मेरे मौला तू ख़ैरात दे दे
अज़ पए ग़ौसे आ'ज़म विलायत अपनी रह़मत से फ़रमा इनायत
अपनी, अपने नबी की विला की मेरे मौला तू ख़ैरात दे दे

(वसाइले बख़्शिश, स. 126,127,128 मुल्तक़त़न)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

मक्तबतुल मदीना की किताब ''फ़ज़ाइले दुआ़''

दुआ़ के मुतअ़ल्लिक़ बहुत सारी अहम मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये वालिदे आ'ला ह़ज़रत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की किताब ''अह़सनुल विआ़ लि आदाबिद्दुआ़'' जिस का उर्दू तरजमा ''फ़ज़ाइले दुआ़'' के नाम से मक्तबतुल मदीना ने प्रिन्ट किया है इस का मुत़ालआ़ कीजिये। اِنْ شَآءَ اللّٰه الْكَرِيْم आप की मा'लूमात में बहुत ज़ियादा इज़ाफ़ा होगा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

आख़िरत अस्ल है और दुन्या इस का नफ़्अ़

ऐ आ़शिक़ाने ग़ौसे आ'ज़म ! हर कारोबार (Business) करने वाला अपने रासुल माल (या'नी अस्ल सरमाए, Capital) को इस्ति'माल (Invest) कर के मनाफ़ेअ़ (Profit) कमाता है, क्या आप ने कभी ऐसा शख़्स देखा है जो अपने अस्ल माल (Capital) की ह़िफ़ाज़त न करे बल्कि फ़क़त नफ़्अ़ पर ही ख़ुश होता रहे ? कोई भी समझदार आदमी ऐसा नहीं करता बल्कि सब की नज़र केपीटल पर होती है कि इस में कमी नहीं होनी चाहिये कि अगर अस्ल माल ख़त्म हो गया तो नफ़्अ़ कहां से आएगा ? क्यूं कि नफ़्अ़ अस्ल माल ही की वज्ह से ह़ासिल हो रहा है।

अब ज़रा ग़ौर से पढ़ें कि ''एक मुसलमान का रासुल माल (या'नी अस्ल सरमाया) और नफ़्अ़ क्या होना चाहिये'' इस के मुतअ़ल्लिक़ मेरे मुर्शिद, शहन्शाहे बग़दाद, ह़ुज़ूर ग़ौसे पाक शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : (ऐ शख़्स !) अपनी आख़िरत को अस्ल माल और दुन्या को उस का नफ़्अ़ बनाना कि आख़िरत केपीटल (रासुल माल) है और

दुन्या नफ़्अ़ है। पहले आख़िरत को ह़ासिल करने के लिये अपना वक़्त ख़र्च कर फिर अगर कुछ वक़्त बचे तो अपनी दुन्या में ज़रीअ़ए मआ़श (वग़ैरा) की त़लब में ख़र्च कर। अपनी दुन्या को अस्ल माल और आख़िरत को इस का नफ़्अ़ न बना वोह इस त़रह़ कि अगर कुछ वक़्त मिले तो आख़िरत के लिये ख़र्च करे कि ख़ामी व कोताही के साथ जल्दी जल्दी पांचों नमाज़ें अदा करे या दुन्या कमा कर थकन हो जाए और तू नमाज़ अदा करने की बजाए मुर्दे की त़रह़ रात में सोया रहे। (शर्हे फ़ुतूहुल ग़ैब (उर्दू), स. 290 मुलख़्ख़सन)

سُبْحٰنَ الله ! मेरे मुर्शिद ग़ौसे पाक ने बहुत अच्छा समझाया है, मौलाना रूमी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं :

ज़िन्दगी आमद बराए बन्दगी ज़िन्दगी बे बन्दगी शरमिन्दगी

"या'नी हमें ज़िन्दगी मिली ही रब्बे करीम की इ़बादत व बन्दगी के लिये है।" क़ुरआने करीम से इस शे'र की ताईद होती है : ﴿وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِیَعْبُدُوْنِ﴾ (پ 27، الذّٰریٰت:56) **तरजमा :** और मैं ने जिन्न और आदमी इसी लिये बनाए कि मेरी इ़बादत करें।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ज़िन्दगी मालो दौलत जम्अ़ करने के लिये नहीं मिली, बल्कि ज़िन्दगी इ़बादत के लिये मिली है, अगर इ़बादत के बिग़ैर ज़िन्दगी गुज़ारी तो क़ियामत में शरमिन्दगी होगी, फिर कुछ हाथ नहीं आएगा। जिस ने दुन्या को रासुल माल बनाया तो उस का रासुल माल दुन्या में ख़त्म हो गया। जब कि ह़क़ीक़त में आख़िरत केपीटल (या'नी अस्ल सरमाया) थी, केपीटल बचाना भूल गए।

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه हमें नसीह़त करते हुए फ़रमाते हैं :

दिन लहव में खोना तुझे, शब सुब्ह़ तक सोना तुझे शर्मे नबी ख़ौफ़े ख़ुदा, येह भी नहीं वोह भी नहीं
रिज़्क़े ख़ुदा खाया किया, फ़रमाने ह़क़ टाला किया शुक्रे करम तर्से सज़ा, येह भी नहीं वोह भी नहीं

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 111)

शर्ह़े कलामे रज़ा : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه दुन्यावी कामों में फंसे दुन्यादार को चोट करते हुए फ़रमाते हैं : ऐ नादान ! तू ख़ुदाए रह़मान की इ़बादत से मुंह मोड़ कर सारा दिन खेलकूद में गुज़ारता है और रात में भी यादे ख़ुदा नहीं करता बल्कि सुब्ह़ तक बिस्तर पर सोया पड़ा रहता है, तुझे अपने प्यारे नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को क़ियामत के दिन मुंह दिखाने से शर्म नहीं आती और क्या तू **अल्लाह** पाक से भी नहीं डरता ? तू **अल्लाह** पाक का अ़त़ा किया हुवा रिज़्क़ खाता है और फिर भी उस की फ़रमां बरदारी नहीं करता, **अल्लाह** पाक के तुझ पर इतने एह़सानात हैं तू इन एह़सानात के शुक्र में **अल्लाह** पाक की इत़ाअ़तो फ़रमां बरदारी की त़रफ़ क्यूं नहीं आता और न उस के अ़ज़ाब से डरता है न इत़ाअ़त की त़रफ़ आता है न अ़ज़ाब से डरता है ? तू कैसा नादान, ग़ाफ़िल और नाशुक्रा है।

वसाइले बख़्शिश में है :

बेवफ़ा दुन्या पे मत कर ए'तिबार तू अचानक मौत का होगा शिकार
काम मालो ज़र नहीं कुछ आएगा ग़ाफ़िल इन्सां याद रख पछताएगा
कर ले तौबा रब की रह़मत है बड़ी क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी

(वसाइले बख़्शिश, स. 711, 712)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

नेकी के रास्ते पर लग जा

मेरे पीरो मुर्शिद हुज़ूर ग़ौसे पाक शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ऐ नादान शख़्स ! तुझे हुक्म दिया गया है कि तू ख़ुद को सलामती के रास्ते पर चला और सलामती के रास्ते आख़िरत और **अल्लाह** पाक की इ़बादत के रास्ते हैं, तू ने नफ़्सो शैत़ान की ख़्वाहिशात पर अ़मल किया तो तुझ से दुन्या व आख़िरत की भलाई फ़ौत हो गई फिर तू क़ियामत के दिन सब से ज़ियादा नेकियों के मुआ़मले में ग़रीब होगा, आख़िरत को अपना अस्ल माल बना ले तो तू दुन्या व आख़िरत में फ़ाएदा उठाएगा । **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** पाक आख़िरत की निय्यत पर दुन्या अ़त़ा फ़रमा देता है लेकिन दुन्या की निय्यत पर आख़िरत अ़त़ा फ़रमाने से इन्कार कर देता है । (الزھد لابن مبارک، ص193، حدیث:549)

येह जहां तेरे लिये और तू ख़ुदा के वासिते़

हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इर्शाद फ़रमाते हैं : **अल्लाह** पाक ने अपनी किसी नाज़िल की हुई किताब में फ़रमाया : ऐ इब्ने आदम (या'नी ऐ आदमी) ! मैं **अल्लाह** हूं, मेरे सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं, मैं किसी चीज़ को "कुन" (या'नी हो जा) फ़रमाता हूं तो वोह हो जाती है, तू मेरी फ़रमां बरदारी कर, मैं तुझे ऐसा कर दूंगा कि तू कहेगा : "हो जा" तो वोह शै हो जाएगी । और फ़रमाया : ऐ दुन्या ! जो मेरी इत़ाअ़तो फ़रमां बरदारी करे तू उस की ख़िदमत कर और जो तेरी ख़िदमत करे तू उस को रन्जो मुसीबत में रख । (फ़ुतूहुल ग़ैब (उर्दू), स. 44 मुलख़्ख़सन)

जानवर पैदा हुए तेरी वफ़ा के वासिते़ — चांद सूरज और सितारे तेरी ज़िया के वासिते़
खेतियां सर सब्ज़ हैं तेरी ग़िज़ा के वासिते़ — सब जहां तेरे लिये है और तू ख़ुदा के वासिते़

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

रह़मते इलाही का पड़ोस

ह़ुज़ूर ग़ौसे पाक शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जब तू दुन्या से बे रग़बत हो कर **अल्लाह** पाक की इत़ाअ़तो फ़रमां बरदारी करेगा तो तू **अल्लाह** पाक के नेक बन्दों और मह़ब्बत करने वालों में से होगा और तुझे जन्नत और **अल्लाह** पाक की रह़मत का पड़ोस नसीब होगा, दुन्या तेरी ख़िदमत करेगी और **अल्लाह** पाक तुझे तेरा जितना दुन्या का ह़िस्सा है पूरा पूरा अ़त़ा फ़रमाएगा इस लिये कि हर चीज़ अपने पैदा करने वाले के इख़्तियार में है और अगर तू आख़िरत से मुंह फेरते हुए दुन्या में मश्ग़ूल हुवा तो **अल्लाह** पाक तुझ से नाराज़ होगा, दुन्या तेरी ना फ़रमानी करेगी और तेरा जितना ह़िस्सा दुन्या में है दुन्या तुझ तक पहुंचाने में तुझे सख़्ती में डालेगी क्यूं कि वोह **अल्लाह** पाक की मिल्क और ख़ादिमा है और जो **अल्लाह** पाक का फ़रमां बरदार हो येह उस की इ़ज़्ज़त करती है।

(फ़ुतूह़ुल ग़ैब (उर्दू), स. 96 ता 97 मुलख़्ख़सन)

दुन्या व आख़िरत की मिसाल

मुसल्मानों के चौथे ख़लीफ़ा, ह़ज़रते मौला अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं : दुन्या व आख़िरत की मिसाल मशरिक़ व मग़रिब जैसी है, तू इन में से किसी एक से जितना क़रीब होगा दूसरी से उतना ही दूर हो जाएगा या इन की मिसाल दो सोकनों जैसी है, तू इन में से किसी एक को ख़ुश करेगा तो दूसरी नाराज़ हो जाएगी। (میزان العمل للغزالی، ص46) किसी की दो बीवियां हों तो दोनों बीवियां एक दूसरे की सोकन कहलाती हैं।

दुन्या वाला या आख़िरत वाला

अल्लाह करीम क़ुरआने अ़ज़ीम के पारह नम्बर 4 **सूरए आले इमरान** की आयत नम्बर 152 में इर्शाद फ़रमाता है :

﴿مِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الدُّنْيَا وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الْاٰخِرَةَ﴾ **तरजमा :** तुम में कोई दुन्या का त़लब गार है और तुम में कोई आख़िरत का त़लब गार है।

मेरे मुर्शिद ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : कहा जाता है : "दुन्या वाले और आख़िरत वाले", तू देख कि तू किन में से है ? और दुन्या में रहते हुए किस गुरौह से होने को ना पसन्द करता है फिर जब तू आख़िरत की त़रफ़ रुजूअ़ करेगा तो एक गुरौह जन्नत में और एक जहन्नम में होगा, एक गुरौह ह़िसाब के लम्बा होने की वज्ह से 50 हज़ार साल के उस एक दिन मैदाने क़ियामत में खड़ा होगा क्यूं कि क़ियामत का एक दिन पचास हज़ार साल का है, एक गुरौह अ़र्श के साए में उस दस्तर ख़्वान पर होगा जिस पर अच्छे अच्छे खाने, फल और बर्फ़ से ज़ियादा सफ़ेद शह्द होगा, वोह अपने ठिकानों की त़रफ़ देखता होगा ह़त्ता कि मख़्लूक़ जब ह़िसाबो किताब से फ़ारिग़ होगी येह लोग जन्नत में दाख़िल होंगे और अपने घरों की त़रफ़ जाएंगे। (फ़ुतूहुल ग़ैब (उर्दू), स. 97, शर्ह़ फ़ुतूहुल ग़ैब (उर्दू), स. 291 मुलख़्ख़सन)

अब देख ले ! तू किस में है ? दुन्या वालों में या आख़िरत वालों में। **अल्लाह** करीम हमें आख़िरत वालों में कर दे। याद रहे कि आख़िरत वाला होने का येह मत़लब नहीं कि बन्दा मां बाप को घर से निकाल दे, बीवी बच्चों को रुख़्सत कर दे बल्कि मत़लब येह है कि इन के साथ रहते हुए आख़िरत को पेशे नज़र रख कर अपनी ज़िन्दगी गुज़ारनी है। तिजारत (बिज़्नेस), नोकरी (जॉब) करे मगर नमाज़ें और दीगर इबादात भी करता रहे और हर गुनाह से ख़ुद को बचाता रहे, दुन्या में रहते हुए शरीअ़त की पाबन्दी करे, सुन्नत के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारे तो ऐसा शख़्स आख़िरत वाला है। सिर्फ़ दुन्या कमाने का ख़याल हो कि

www.dawateislami.net

सूद व रिश्वत, चोरी और डकैती, धोकेबाज़ी वग़ैरा, अल ग़रज़ जिस भी ह़राम ज़रीए़ से आता है तो बस आने दो, येह ख़राब दुन्या वाला है।

दुन्या की जाइज़ मह़ब्बत जिस में ह़लाल माल जम्अ़ करना हो, गुनाह का काम नहीं है लेकिन इस की पज़ीराई नहीं है क्यूं कि येह माल के जाल में फंसता जा रहा है, हो सकता है कि येह माल उस को घसीट कर ग़फ़्लत में ले जाए, इबादत और नेकियों से दूर करे। बारहा ऐसा होता भी है। मज़ीद येह कि ह़लाल माल पर क़ियामत का ह़िसाब बड़ा कड़ा (या'नी सख़्त) होगा कि कहां से ह़ासिल किया, किस त़रह़ ह़ासिल किया, कहां कहां ख़र्च किया ? येह जवाब देना आसान नहीं है और ह़राम माल पर सज़ा है।

तू बे ह़िसाब बख़्श कि हैं बे शुमार जुर्म देता हूं वासित़ा तुझे शाहे ह़िजाज़ का

(ज़ौक़े ना'त, स. 18)

दुन्या आख़िरत की खेती है

इन्सान क़ियामत के दिन भलाई और बुराई को याद करेगा, जो दुन्या में कर चुका है तो वहां उस वक़्त शर्मिन्दगी कुछ फ़ाएदा नहीं देगी, मौत से पहले मौत को याद करने में बेशक फ़ाएदा है, फ़स्ल काटते वक़्त, फ़स्ल और बीज को याद करना फ़ाएदे मन्द नहीं, जैसा कि ह़दीसे पाक है : ''اَلدُّنْيَا مَزْرَعَةُ الْآخِرَة'' या'नी दुन्या आख़िरत की खेती है। लिहाज़ा यहां जैसा बोएंगे वैसा आख़िरत में काटेंगे। जो शख़्स यहां अच्छी फ़स्ल लगाएगा या'नी भलाई के काम करेगा नेकियां करेगा वोही क़ाबिले रश्क होगा और जो बुराई करेगा आख़िरत में शरमिन्दगी उठाएगा कि नेकियां करने वाला भलाई की फ़स्ल काटेगा उसे अच्छा सिला मिलेगा और जो बुरी फ़स्लें (बुराइयां) बोएगा तो वोह आख़िरत में अ़ज़ाबों की फ़स्लें काटेगा। और जब मौत तेरे सामने हो उस वक़्त तू बेदार हुवा तो क्या फ़ाएदा ? (الفتح الربانی، ص30 ملخصًا)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमारे मरने वाले के बारे में हमारे यहां कहा जाता है कि उस ने आंख बन्द कर ली, ह़क़ीक़त येह है कि आंख बन्द नहीं होती बल्कि मरने से आंख खुलती है, मरने के बा'द इन्सान के साथ जो हो रहा होता है वोह सब देखता है, मगर कुछ कर नहीं सकता।

शहज़ादए आ'ला ह़ज़रत, हुज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द मौलाना मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللّٰہِ عَلَيْه ख़ास कर नौ जवानों को उभारते हुए अपनी जवानी में अपने आप को कह रहे हैं :

रियाज़त के येही दिन हैं बुढ़ापे में कहां हिम्मत

जो कुछ करना है अब कर लो अभी नूरी जवां तुम हो

(सामाने बख़्शिश, स. 159)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

जैसी शान वैसी आज़्माइश

सय्यिदी व मुर्शिदी हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللّٰہِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : **अल्लाह** पाक अपने बन्दए मोमिन को हमेशा उस की कुव्वते ईमानी के मुत़ाबिक़ आज़्माता है तो जिस का ईमान ज़ियादा मज़बूत़ हो तो उस पर आज़्माइश भी बड़ी होती है। नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''اِنَّا مَعَاشِرُ الْاَنْبِيَاءِ اَشَدُّ النَّاسِ بَلَاءً या'नी हम गुरौहे अम्बिया की आज़्माइश तमाम लोगों से ज़ियादा सख़्त होती है।'' (الحدیث المختارہ،3/246،حدیث:1053) **अल्लाह** पाक सादाते किराम को हमेशा आज़्माइश में रखता है ताकि वोह हर वक़्त हुज़ूरी में रहें और बेदारी से ग़ाफ़िल न हों ! क्यूं कि **अल्लाह** पाक इन से मह़ब्बत रखता है, वोह अहले मह़ब्बत और **अल्लाह** पाक के मह़बूब (या'नी पसन्दीदा) हैं। (फ़ुतूहुल ग़ैब (उर्दू), स. 61 मुलख़्ख़सन)

ऐ आशिक़ाने ग़ौसे आ'ज़म ! मेरे पीरो मुर्शिद हुज़ूर ग़ौसे पाक सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के इस फ़रमान में ग़म के मारों, दुख्यारों, बे क़रारों के लिये बड़ी राह़त का सामान है, ज़िन्दगी में मुख़्तलिफ़ मवाक़ेअ़ पर आज़्माइशों और तक्लीफ़ों का आना गुनाहों की मुआ़फ़ी, बाइ़से तरक़्क़िये दरजात और नुज़ूले रह़मते रब्बुल इ़बाद का सबब भी हो सकता है। ह़दीसे पाक में है : "**अल्लाह** पाक जब किसी क़ौम से मह़ब्बत फ़रमाता है तो उन्हें आज़्माइशों में मुब्तला फ़रमा देता है।"

(مسند امام احمد،9/163،حدیث:23702ملتقطاً)

हमें चाहिये कि हर मुआ़मले में राज़ी ब रिज़ाए मौला (या'नी **अल्लाह** पाक की रिज़ा में राज़ी) रहें। इसी में दोनों जहां की भलाई और बेहतरी है। एक और मक़ाम पर हुज़ूर ग़ौसे पाक शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه इर्शाद फ़रमाते हैं : इन्सान में कई गुनाह, ख़ताएं और जुर्म हैं और मुख़्तलिफ़ क़िस्म के गुनाहों से आलूदा होने वाला शख़्स **अल्लाह** पाक के क़ुर्ब (या'नी नज़्दीकी) की सलाह़िय्यत नहीं रखता, जब तक गुनाहों की नजासत से पाक न हो जाए, जैसे बादशाहों के पास बैठने की सलाह़िय्यत उस को होती है जो नजासतों, बदबूओं और मैल कुचैल से पाक साफ़ हो, लिहाज़ा बलाएं और मुसीबतें वग़ैरा गुनाहों का कफ़्फ़ारा और इन्हें मिटाने वाली हैं। जैसा कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "एक रात का बुख़ार एक साल का कफ़्फ़ारा है।"

(موسوعۃ لابن ابی الدنیا،4/239،حدیث:50, फ़ुतूहुल ग़ैब (उर्दू), स. 55 मुलख़्ख़सन)

ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देह्लवी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : बीमारियां गुनहगारों को गुनाहों से पाक और नेकों के दरजात बुलन्द करती

हैं, जब बुख़ार की मुद्दत, बन्दे की उ़म्र से ज़ियादा हो और तमाम गुनाहों को मिटा दे तो यक़ीनन बुख़ार की बक़िय्या मुद्दत उस बन्दे के दरजात में बुलन्दी का सबब बनेगी। (शर्हे फ़ुतूहुल ग़ैब (उर्दू), स. 177 मुलख़्ख़सन)

ज़बां पे शिक्वए रन्जो अलम लाया नहीं करते नबी के नाम लेवा ग़म से घबराया नहीं करते

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

"सब्र" के तीन हुरूफ़ की निस्बत से मुसीबतों पर सब्र के तीन फ़ज़ाइल

﴾1﴿ **अल्लाह** पाक इर्शाद फ़रमाता है : "जब मैं अपने किसी बन्दे को उस के जिस्म, माल या औलाद के ज़रीए आज़्माइश में मुब्तला करूं, फिर वोह सब्रे जमील[1] के साथ उस का इस्तिक़्बाल करे तो क़ियामत के दिन मुझे ह़या आएगी कि उस के लिये मीज़ान क़ाइम करूं या उस का नामए आ'माल खोलूं।" (نوادر الاصول، ص700، حدیث:963)

﴾2﴿ सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं कि मैं ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! सब से ज़ियादा मुसीबतें किन लोगों पर आईं ?" फ़रमाया : "अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام पर, फिर इन के बा'द जो लोग बेहतर हैं, फिर उन के बा'द जो बेहतर हैं। बन्दे को उस की दीनदारी के ए'तिबार से मुसीबत में मुब्तला किया जाता है, अगर वोह दीन में सख़्त होता है तो उस की आज़्माइश भी सख़्त होती है और अगर वोह अपने दीन में कमज़ोर होता है तो **अल्लाह** पाक उस की दीनदारी के मुत़ाबिक़ उसे आज़्माता है। बन्दा मुसीबत में मुब्तला होता रहता है यहां तक कि दुन्या ही में उस के सारे गुनाह बख़्श दिये जाते हैं।" (ابن ماجہ، 4/369، حدیث:4023)

---

1 ... सब्रे जमील या'नी सब से बेहतरीन सब्र येह है कि मुसीबत में मुब्तला शख़्स को कोई न पहचान सके, उस की परेशानी किसी पर ज़ाहिर न हो। (احیاء العلوم، 4/91)

﴿3﴾ सब्र भलाइयों के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना है।

(موسوعۃ لابن ابی الدنیا، 4/24، حدیث:16)

है सब्र तो ख़ज़ानए फ़िरदौस भाइयो ! शिक्वा न आ़शिक़ों की ज़बानों पे आ सके

(वसाइले बख़्शिश, स. 412)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

गुनाहों का कफ़्फ़ारा

मुसल्मानों की प्यारी प्यारी अम्मीजान ह़ज़रते बीबी आ़इशा सिद्दीक़ा त़य्यिबा त़ाहिरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا से मरवी है कि जब बन्दे के गुनाह बहुत ज़ियादा हो जाएं और उस के आ'माल ऐसे न हों जो उस के गुनाहों का कफ़्फ़ारा बन सकें तो **अल्लाह** पाक बन्दे को परेशानियों में मुब्तला फ़रमा देता है जो उस के गुनाहों का कफ़्फ़ारा बन जाती हैं। (قوت القلوب، 1/314)

तक्लीफ़ में हंस पड़ीं

हुज़ूर ग़ौसे पाक शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जब फ़िरऔ़न को अपनी ज़ौजा ह़ज़रते बीबी आसिया رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهَا के मुसल्मान होने का पता चला तो उस ने उन को तक्लीफ़ पहुंचाने का हुक्म दिया और उन के दोनों हाथों और पाउं में लोहे की मेख़ें ठोंक कर कोड़ों से सज़ा देना शुरूअ़ कर दी। ह़ज़रते बीबी आसिया رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهَا ने इस ह़ाल में अपना सर आस्मान की त़रफ़ उठाया तो देखा कि जन्नत के दरवाज़े खुले हुए हैं और फ़िरिश्ते उन का जन्नत में मह़ल ता'मीर कर रहे हैं। ह़ज़रते इ़ज़राईल عَلَيْهِ السَّلَام ह़ज़रते बीबी आसिया رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهَا के पास रूह़ क़ब्ज़ करने के लिये तशरीफ़ लाए और उन से फ़रमाया : जन्नत में येह मह़ल आप का है। येह सुन कर ह़ज़रते बीबी आसिया رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهَا हंस पड़ीं तो उन से वोह

जिस्मानी तक्लीफ़ दूर हो गई और उन्हों ने बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ की : ऐ मेरे परवर्दगार ! मेरे लिये अपने क़रीब जन्नत में महल तय्यार फ़रमा ।

क़ुरआने करीम में पारह 28 **सूरतुत्तहरीम**, आयत नम्बर 11 में इर्शाद होता है :

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا امْرَاَتَ فِرْعَوْنَ ۘ اِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِيْ عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَنَجِّنِيْ مِنْ فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهٖ وَنَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۱﴾

तरजमा : और **अल्लाह** ने मुसल्मानों के लिये फ़िरऔ़न की बीवी को मिसाल बना दिया जब उस ने अ़र्ज़ की : ऐ मेरे रब ! मेरे लिये अपने पास जन्नत में एक घर बना और मुझे फ़िरऔ़न और उस के अ़मल से नजात दे और मुझे ज़ालिम लोगों से नजात अ़ता फ़रमा ।

हुज़ूर ग़ौसे पाक शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : (ऐ इन्सान !) तू भी अपनी मुसीबत पर ऐसा सब्र करने वाला हो जा क्यूं कि जो कुछ **अल्लाह** पाक की ने'मतें जन्नत में हैं वोह तुझे तेरे दिल और यक़ीन की आंखों से नज़र आएंगी और जो यहां मुसीबतें, परेशानियां हैं तू उन पर सब्र करने वाला बन जाएगा । (الفتح الربانی، ص133)

सब्रो शुक्र कर

हुज़ूर ग़ौसे पाक शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : (ऐ **अल्लाह** के बन्दे !) अगर तेरी क़िस्मत में ने'मत का मिलना है तो वोह तुझे ज़रूर मिल कर रहेगी, चाहे तू उस को त़लब करे या ना पसन्द करे ! और अगर तेरी क़िस्मत में मुसीबत व तक्लीफ़ है और तेरे लिये उस का फ़ैसला हो चुका है, तू ख़्वाह उसे ना पसन्द करे या उस से बचने की दुआ़ करे तब भी वोह मुसीबत तुझ पर आ कर रहेगी । अपने तमाम मुआ़मलात **अल्लाह**

पाक के ह़वाले कर दे, अगर तुझे ने'मतें अ़ता हों तो शुक्र अदा कर और अगर आज़्माइश का सामना हो तो सब्र कर। (قلائد الجواہر مع فتوح الغیب، ص24)

मुश्किलों में दे सब्र की तौफ़ीक़ अपने ग़म में फ़क़त़ घुला या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 80)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

मस्जिद और दुरूद शरीफ़

हमारे पीरो मुर्शिद ह़ुज़ूर ग़ौसे पाक शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ऐ उम्मते मुह़म्मद ! **अल्लाह** पाक का शुक्र किया करो कि पहली उम्मतें जितना अ़मल करती थीं, **अल्लाह** पाक उन की निस्बत तुम से थोड़े अ़मल पर ही राज़ी हो जाता है। मस्जिद को लाज़िम पकड़ लो और नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ा करो। (الفتح الربانی، ص23، 24 ملتقطاً)

बचें बेकार बातों से, पढ़ें ऐ काश कसरत से
तेरे मह़बूब पर हर दम दुरूदे पाक हम मौला

(वसाइले बख़्शिश, स. 99)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

मुसल्मानों की ख़ैर ख़्वाही

शव्वालुल मुकर्रम, 545 हिजरी, जुमुआ़ का दिन था, मेरे मुर्शिदे पाक ह़ुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने अपने मद्रसे में मुसल्मान भाइयों की हमदर्दी के मौज़ूअ़ पर बयान किया, दौराने बयान मुर्शिद ने फ़रमाया : पाक है वोह ज़ात जिस ने मेरे दिल में मख़्लूक़ की ख़ैर ख़्वाही (या'नी भलाई चाहने) का जज़्बा डाल दिया और मख़्लूक़ की

भलाई करना मेरी ज़िन्दगी का बड़ा मक़्सद बनाया। बेशक मैं तुम्हें नसीह़त करने वाला हूं, मैं इस पर तुम से कोई जज़ा नहीं चाहता, मेरी ख़ुशी इसी में है कि तुम काम्याब हो जाओ ! अगर तुम बरबाद हुए तो मुझे ग़म होगा।

(الفتح الربانی، ص41)

इन्तिहाई रह़्म दिली

मेरे मुर्शिद ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : ऐ लोगो ! मैं तुम्हारी त़रफ़ सिर्फ़ो सिर्फ़ **अल्लाह** पाक की रिज़ा के लिये मुतवज्जेह होता या'नी तवज्जोह करता हूं, मेरे अन्दर तुम्हारे लिये ऐसी रह़्म दिली और शफ़्क़त है कि अगर हो सकता तो मैं तुम्हारी जगह तुम में से हर एक की क़ब्र में ख़ुद उतरता और तुम्हारी त़रफ़ से नकीरैन या'नी मुन्कर नकीर को जवाब भी ख़ुद ही देता ! (الفتح الربانی، ص318)

سُبْحٰنَ الله ! शफ़्क़त का कितना प्यारा अन्दाज़ है कि मेरे बस में होता, मैं तुम्हारी जगह क़ब्र में आ जाता, मुन्कर नकीर तुम से सुवाल करते और मैं जवाब दे देता।

अ़ज़ीज़ो कर चुको तय्यार जब मेरे जनाज़े को तो लिख देना कफ़न पर नामे वाला ग़ौसे आ'ज़म का
निदा देगा मुनादी ह़श्र में यूं क़ादिरिय्यों को कहां हैं क़ादिरी कर लें नज़ारा ग़ौसे आ'ज़म का

(क़बालए बख़्शिश, स. 98, 99)

अल्लाह पाक का सब से ज़ियादा प्यारा

मेरे पीरो मुर्शिद ग़ौसे आ'ज़म शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने 11 जुमादल उख़्रा 545 हिजरी को अपने मद्रसे में दौराने बयान फ़रमाया : ऐ मालदारो ! अगर दुन्या व आख़िरत की भलाई चाहते हो तो अपने माल के ज़रीए ग़रीबों से हमदर्दी करो ! फिर आप ने एक ह़दीसे पाक बयान

फ़रमाई : **अल्लाह** पाक के आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : लोग **अल्लाह** पाक के इ़याल हैं, **अल्लाह** पाक का ज़ियादा प्यारा वोह है जो **अल्लाह** पाक के इ़याल को ज़ियादा फ़ाएदा पहुंचाने वाला हो। (موسوعۃ لابن ابی الدنیا، 4/159، حدیث:24۔ الفتح الربانی، ص111)

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मख़्लूक़ को **अल्लाह** पाक की इ़याल कहना मजाज़न है, ह़क़ीक़त नहीं है। चूं कि **अल्लाह** पाक बन्दों के रिज़्क़ का ज़ामिन व कफ़ील है तो मख़्लूक़ इ़याल की त़रह़ हो गई, ह़क़ीक़त में **अल्लाह** पाक औलाद, ख़ानदान से पाक है, तो इन मा'नों पर कि **अल्लाह** पाक उन का ज़ामिन व कफ़ील है, सब की रोज़ी अपने ज़िम्मए करम पर ली हुई है। इ़याल से मुराद येह है कि मख़्लूक़ **अल्लाह** पाक की मोह़ताज है जब कि **अल्लाह** पाक उन की ज़रूरिय्यात पूरी फ़रमाता है। मज़ीद फ़रमाते हैं : अच्छे बरताव में **अल्लाह** पाक की त़रफ़ हिदायत देना, ता'लीम देना, मेह़रबानी करना, रह़म करना, उन पर ख़र्च करना वग़ैरा दीनी व दुन्यावी भलाइयों में शामिल हैं। आक़ा को अपने बन्दों पर किसी का एह़सान करना अच्छा लगता है। इस ह़दीस में मख़्लूक़ की ज़रूरिय्यात पूरी करने और इ़ल्म, माल, इ़ज़्ज़त, जाइज़ सिफ़ारिश वग़ैरा जो आसान लगे उस के ज़रीए नफ़्अ़ पहुंचाने की फ़ज़ीलत मौजूद है। लोगों को नेकी की दा'वत देना, **अल्लाह** पाक के रास्ते की त़रफ़ बुलाना, इ़ल्मे दीन सिखाना, लोगों के साथ नरमी से पेश आना, लोगों पर रह़म करना, शफ़्क़त करना, इन पर माल ख़र्च करना, ग़रज़ (शरीअ़त के दाएरे में रहते हुए) दीनी या दुन्यवी किसी मुआ़मले में लोगों के साथ नेकी करना, भलाई करना, येह सब कुछ लोगों को नफ़्अ़, फ़ाएदा पहुंचाने में शामिल है।

(فیض القدیر، 3/674، تحت الحدیث:4135 ملخصًا)

मुसल्मां मुसल्मान के ख़ूं का प्यासा हुवा वक़्त आया अ़जब या इलाही
सभी एक हो जाएं ईमान वाले पए शाहे आ़ली नसब या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 108)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

हर ह़ाल में शुक्र

मेरे मुर्शिदे पाक, शहन्शाहे बग़्दाद, हुज़ूर ग़ौसे पाक शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : मेरी वसिय्यत है कि **अल्लाह** करीम की त़रफ़ से आने वाली आज़्माइश का किसी से भी ज़िक्र न कर, चाहे वोह तेरा दोस्त हो या दुश्मन, बल्कि उस का शुक्र अदा कर, कौन है कि जिस के पास **अल्लाह** पाक की कोई ने'मत न हो। तुम्हारे पास ऐसी कितनी ने'मतें हैं जिन का तुम्हें भी इ़ल्म नहीं, अगर तू आ़फ़ियत और अपने पास ने'मत मौजूद होने के बा वुजूद मज़ीद चाहिये इस लिये पहली वाली ने'मतों को जानते बूझते भुला कर या हलका समझ कर अपने रब से शिकायत करेगा तो वोह पहली मौजूद ने'मत को तुझ से दूर कर के तेरी इस शिकायत को दुरुस्त कर देगा और तेरी परेशानी को डबल कर देगा और तुझ से नाराज़ होगा लिहाज़ा तू शिकायत करने से बहुत ज़ियादा बच अगर्चे तेरा गोश्त क़ैंचियों से काट दिया जाए। (शर्ह़ें फ़ुतूहुल ग़ैब (उर्दू), स. 170, 171 मुलख़्ख़सन)

ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ का बयान है : एक मरतबा आ'ला ह़ज़रत رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ बीमार थे, मैं इ़यादत को गया, ह़स्बे मुआ़वरा पूछा : हुज़ूर ! अब शिकायत का क्या ह़ाल है ? फ़रमाया : शिकायत किस से हो ? **अल्लाह** (पाक) से न तो शिकायत पहले थी न अब है, बन्दे को ख़ुदा से कैसी शिकायत ! (सदरुश्शरीअ़ह

رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं :) मैं ने ज़िन्दगी भर के लिये इस मुहावरे से तौबा कर ली। (फ़तावा अम्जदिय्या, 2/388)

हमारे यहां आ़म बोलचाल में शिकायत ही बोलते हैं। मुझे पेट के दर्द की शिकायत है, मुझे पीठ के दर्द की शिकायत है, तंगदस्ती की शिकायत है, सर के दर्द की शिकायत है। लफ़्ज़ शिकायत बोलने से पहले सोच लेना चाहिये कि येह दिया किस ने है ? तो क्या इस की शिकायत भी की जाती है ?

मेरे मुर्शिद ग़ौसे पाक ने बड़े प्यारे अन्दाज़ में समझाया कि शिकायत मत करना। ह़ज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام का एक क़ौल क़ुरआने करीम में है : ﴿وَاِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِيْنِ ۙ﴾ (پ19، الشعراء:80) **तरजमा :** और जब मैं बीमार होउं तो वोही मुझे शिफ़ा देता है।

या'नी आदाब येह हैं कि बीमारी, मुसीबत, परेशानी अपनी त़रफ़ मन्सूब करे, यूं न कहे कि मुझे रब ने बीमार कर दिया बल्कि यूं कहे : जब मैं बीमार होता हूं तो वोह मुझे शिफ़ा देता है, शिफ़ा, सिह़्ह़त एक ने'मत है। बा'ज़ लोग यहां तक बोल देते हैं कि रब ने मुझे औलाद की ने'मत से मह़रूम रखा, येह बहुत सख़्त जुम्ला है, ज़रा ग़ौर करो कि तुम **अल्लाह** पाक की कितनी बातें मानते हो, कितनी फ़रमां बरदारी करते हो। बहर ह़ाल **अल्लाह** पाक की शिकायत न की जाए। अगर कोई येह जुम्ला बोले तो उस पर चढ़ाई नहीं करनी, कई लोग इस त़रह़ के जुम्ले बोल रहे होते हैं, مَعَاذَ الله बोलते वक़्त किसी की येह निय्यत नहीं होती कि वोह रब की शिकायत कर रहा है।

अहम बात : शिक्वा शिकायत एक लफ़्ज़ है। बा'ज़ सूरतों में रब पर शिक्वा होता है कि रब ने मेरे साथ ऐसा क्यूं किया ? अगर ए'तिराज़ पाया जाएगा तो बन्दा इस्लाम से ही निकल जाएगा लेकिन आ़म त़ौर पर जो

येह कहा जाता है कि बीमारी की शिकायत है इस पर कोई हुक्म न लगाया जाए। मैं ने भी आ'ला हज़रत رَحۡمَةُاللّٰہِعَلَیۡه के वाक़िए से जाना कि शिकायत का लफ़्ज़ नहीं बोलना।

दीनी किताबों के मुतालए की तरग़ीब

हर हफ़्ते मदनी मुज़ाकरे में एक रिसाले का ए'लान होता है, इस की पीडीएफ़ और बोलता रिसाला (Audio book) भी वायरल होता है। आप मक्तबतुल मदीना और उ़लमाए अहले सुन्नत की किताबों का मुतालआ़ करते रहें तो इस त़रह़ की मा'लूमात ह़ासिल होती रहेंगी। अब तो इल्म ह़ासिल करना बहुत आसान हो गया है, मश्हूर है कि प्यासा कूंएं के पास जाता है लेकिन अब कूंवां घर घर पहुंच कर कह रहा है : आओ प्यासो ! प्यास बुझाओ। लेकिन हम लोग पढ़ने, सुनने के लिये तय्यार नहीं। आप येह पढ़ें, सुनें दुन्या व आख़िरत की ढेरों भलाइयां हाथ आएंगी اِنۡ شَآءَاللّٰه।

मुश्किलों में मेरे ख़ुदा मेरी हर क़दम पर मुआ़वनत फ़रमा
सरफ़राज़ और सुर्ख़ रू मौला मुझ को तू रोज़े आख़िरत फ़रमा

(वसाइले बख़्शिश, स. 75)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

सब से बड़ा मेहरबान

सरकारे बग़दाद, हुज़ूरे ग़ौसे पाक, शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحۡمَةُاللّٰہِعَلَیۡه फ़रमाते हैं : इन्सान पर अक्सर मुसीबतें **अल्लाह** पाक की बारगाह में गिला शिक्वा करने के सबब ही नाज़िल होती हैं। ऐ नादान इन्सान ! तू किस मुंह से **अल्लाह** पाक से गिला शिक्वा करता है ह़ालां कि वोह सब से बढ़ कर रह़्म करने वाला, मेहरबान है, वोह अपने बन्दों पर

बिल्कुल ज़ुल्म नहीं करता। क्या शफ़्क़तो मेहरबानी करने वाले वालिदैन पर इल्ज़ाम लगाया जा सकता है जब कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : اَللّٰهُ اَرْحَمُ بِعَبْدِهِ الْمُؤْمِنِ مِنَ الْوَالِدَةِ الشَّفِيْقَةِ بِوَلَدِهَا या'नी "**अल्लाह** पाक मां के बच्चे पर शफ़्क़त करने से ज़ियादा अपने बन्दे पर मेहरबान है।"

(بخاری، 4/100، حدیث:5999)

ऐ **अल्लाह** के बन्दे! तू बा अदब बन जा और मुसीबत के वक़्त सब्र कर और अगर तू सब्र न कर सके फिर भी सब्र कर और शरीअ़त के अह़कामात की पाबन्दी कर और रिज़ाए इलाही पर राज़ी रह, अपने आप को नफ़्सानी ख़्वाहिशात से फेर कर अपनी ज़बान को शिक्वा शिकायत से रोक। जब तू येह सब कर लेगा और अगर तेरी क़िस्मत में ख़ैरो भलाई होगी तो **अल्लाह** पाक तेरी पाकीज़ा ज़िन्दगी और ख़ुशी में इज़ाफ़ा करेगा और अगर तक़्दीर (या'नी **अल्लाह** पाक ने जो कुछ तेरे लिये तै़ किया है उस) में तेरे लिये परेशानी होगी तो **अल्लाह** पाक की फ़रमां बरदारी की वज्ह से वोह तेरी हिफ़ाज़त फ़रमाएगा और तुझे अपनी रिज़ा पर राज़ी रखेगा यहां तक कि वोह परेशानी गुज़र जाए और हर आफ़त अपना वक़्त पूरा होने के बा'द चली ही जाती है जैसे रात के बा'द दिन आता है तो वोह अपनी रोशनी से रात के अंधेरे को ख़त्म कर देता है। (फ़ुतूहुल ग़ैब (उर्दू), स. 54 ता 56 मुल्तक़त़न व मुलख़्ख़सन)

दौलतें ऐसी ने'मतें इतनी बे ग़रज़ तू ने कीं अ़त़ा या रब
तू करीम और करीम भी ऐसा कि नहीं जिस का दूसरा या रब
तू ह़सन को उठा ह़सन कर के हो मअ़ल ख़ैर ख़ातिमा या रब

(ज़ौक़े ना'त, स. 85, 87)

या'नी **या अल्लाह** पाक! मेरा अच्छा ख़ातिमा हो, मुझे अच्छी मौत नसीब फ़रमा।

आ'ला ह़ज़रत رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ का इर्शाद है : वक़्ते मर्ग क़रीब है या'नी मेरा दुन्या से जाने का वक़्त क़रीब है और अपनी ख़्वाहिश येही है कि मदीनए त़य्यिबा में ईमान के साथ मौत और बक़ीए़ मुबारक में ख़ैर के साथ दफ़्न नसीब हो और वोह क़ादिर है। (ह़यातेआ'ला ह़ज़रत, 3/461 मुल्तक़त़न) **अल्लाह** पाक हमें ख़ैर के साथ जन्नतुल बक़ीअ़ में दफ़्न होना नसीब फ़रमाए। आमीन

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

हर मुश्किल के बा'द आसानी है

मेरे मुर्शिदे करीम, हुज़ूर ग़ौसे पाक शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ने फ़रमाया : अक्सर ऐसा होता है कि तू (परेशानी वग़ैरा की ह़ालत में) कहता है : मैं क्या करूं ? कहां जाऊं ? क्या ह़ल करूं ? तो जवाबन तुझे कहा जाता है : अपनी जगह पर ठहर और अपनी ह़द से आगे न बढ़ (या'नी बे सब्री न कर) यहां तक कि तेरे पास उस की त़रफ़ से कुशादगी आए जिस ने तुझे इस ह़ाल में साबित क़दम रहने का इर्शाद फ़रमाया। **अल्लाह** पाक पारह 4 **सूरए आले इमरान** आयत नम्बर 200 में इर्शाद फ़रमाता है : ﴿اِصۡبِرُوۡا وَصَابِرُوۡا وَرَابِطُوۡا ۟ وَاتَّقُوا اللّٰہَ﴾ **तरजमा :** "सब्र करो और सब्र में दुश्मनों से आगे रहो और इस्लामी सरह़द की निगह़बानी करो और **अल्लाह** से डरते रहो।" इस आयत की तफ़्सीर में हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : ऐ बन्दए मोमिन ! **अल्लाह** पाक ने तुझे सब्र का हुक्म दिया फिर सब्र में भी मुबालग़ा और इस पर मज़बूत़ी से जमे रहने का फ़रमाया और फ़रमाया : **अल्लाह** पाक से सब्र को छोड़ने से डरो क्यूं कि ख़ैरो सलामती सब्र में है। जैसा कि रिवायत में है : "सब्र ईमान में ऐसे है जैसे सर बदन में।" येह भी कहा गया है कि हर चीज़ का सवाब एक मिक़्दार और अन्दाज़े के साथ है सिवाए सब्र के, बेशक सब्र का सवाब बे ह़िसाब है। **अल्लाह** पाक पारह 23 **सूरतुज़्ज़ुमर**,

आयत नम्बर 10 में इर्शाद फ़रमाता है : ﴿ اِنَّمَا یُوَفَّى الصّٰبِرُوْنَ اَجْرَهُمْ بِغَیْرِ حِسَابٍ ﴾

तरजमा : सब्र करने वालों ही को उन का सवाब बे हिसाब भरपूर दिया जाएगा। (शर्हे फ़ुतूहुल ग़ैब (उर्दू), स. 254, 255)

मेरे मुर्शिदे करीम, ग़ौसे आ'ज़म दस्त गीर ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ मजीद फ़रमाते हैं : ऐ बन्दे ! सब्र दुन्या व आख़िरत में हर ख़ैरो भलाई की अस्ल है और सब्र ही से मोमिन **अल्लाह** पाक की रिज़ा तक पहुंचता है। सब्र को छोड़ने से बच क्यूं कि बे सब्री से दुन्या व आख़िरत में तू शरमिन्दा होगा। (शर्हे फ़ुतूहुल ग़ैब (उर्दू), स. 256 मुल्तक़तन)

रोना मुसीबत का तू मत रो आले नबी के दीवाने
कर्बो बला वाले शहज़ादों पर भी तू ने ध्यान किया ?

(वसाइले बख़्शिश, स. 197)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ علٰی مُحَمَّد

भलाई की बुन्याद

ऐ बन्दे ! अगर तू चाहता है कि तू परहेज़ गार, **अल्लाह** पाक पर भरोसा करने वाला बन जाए तो सब्र को इख़्तियार कर क्यूं कि सब्र भलाई की बुन्याद है, जब सब्र के मुतअ़ल्लिक़ तेरी निय्यत दुरुस्त हो जाएगी और तू **अल्लाह** पाक की रिज़ा के लिये सब्र करेगा तो तुझे इस सब्र का बदला येह मिलेगा कि तू दुन्या व आख़िरत में **अल्लाह** पाक का क़ुर्ब (या'नी नज़्दीकी) ह़ासिल करने और मह़ब्बत करने वालों में दाख़िल हो जाएगा। (الفتح الربانی، ص136)

मुसल्मां हूं अगर्चे बद हूं सच्चे दिल से करता हूं
तेरे हर हुक्म के आगे सरे तस्लीम ख़म मौला

(वसाइले बख़्शिश, स. 97)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ علٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net